नीचभंग राजयोग

• सुशील अग्रवाल

यदि नीचभंग राजयोग केन्द्र या त्रिकोण भावों में निर्मित होता है, तो और उत्कृष्ट राजयोग फलप्रद होता है।

ज्योतिष में रुचि रखने वाले दिन-प्रतिदिन नीच राशिस्थ ग्रहों का आकलन करते हैं। सामान्यत: नीच ग्रहों का जन्मकुंडली में होना अशुभ माना जाता है। समयाभाव के कारण ज्योतिषीगण भी कई बार चूक कर जाते हैं, क्योंकि नीच राशिस्थ ग्रह सदैव अशुभ परिणाम नहीं देता, वह किन्हीं परिस्थितियों में राजयोगफलप्रद भी होता है।

'नीच' शब्द का अर्थ है- सामान्यस्तर से निम्न, दुष्ट, अशुभ आदि। **'भंग'** का अर्थ है- वैधता रद्द होना। इसीलिए **'नीचभंग राजयोग'** में ग्रह का नीचत्व रद्द होकर उत्कृष्ट (राजयोग) फलप्रद हो जाता है।

साहित्यिक सन्दर्भ और उदाहरण

1. फलदीपिका में नीचभंग राजयोग

फलदीपिका, अध्याय-7 में श्लोक 26 से 30 तक कुल 5 श्लोक दिये गए हैं, जिनका विवरण निम्न है :

नीचस्थितो जन्मनि यो ग्रहः स्यात्तद्राशिनाथोऽपि तदुच्चनाथः।
स चन्द्रलग्नाद्यदि केन्द्रवर्ती राजा भवेद्धार्मिकचक्रवर्ती।।

(फलदीपिका 7/26)

जातक धार्मिक और चक्रवर्ती राजा होता है, यदि नीच ग्रहका राशीश और नीच ग्रह का उच्चनाथ चन्द्र से और लग्न से केन्द्र में हो।

उदाहरण-1 : प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी

जन्म दिनांक : 17 सितम्बर, 1950
जन्म समय : 11:00 बजे
जन्म स्थान : वडनगर (गुजरात)

जन्मकुण्डली

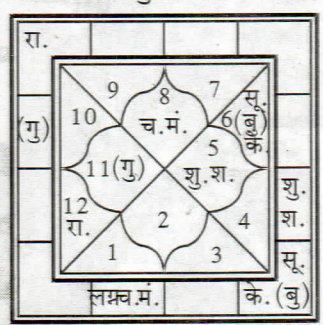

प्रस्तुत उदाहरण में चन्द्रमा लग्न में नीच राशिस्थ है। चन्द्रमा का नीचनाथ मंगल (वृश्चिक का स्वामी) है और उच्चनाथ शुक्र (वृषभ का स्वामी) है। मंगल और शुक्र दोनों ही लग्न और चन्द्रमा दोनों से केन्द्र में स्थित हैं, अत: नीचभंग राजयोग निर्मित होता है।

यद्येको नीचगतज्ञस्त-द्राश्यधिपस्तदुच्चपः केन्द्रे
यस्य स तु चक्रवर्ती समस्त

प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी की कुण्डली में चन्द्रमा लग्न में नीच राशिस्थ है। चन्द्रमा का नीचनाथ मंगल है और उच्चनाथ शुक्र है। मंगल और शुक्र दोनों ही लग्न और चन्द्रमा दोनों से केन्द्र में स्थित हैं, अतः नीचभंग राजयोग निर्मित होता है।

भूपालवन्द्यांघ्रिः।।

(फलदीपिका 7/27)

जातक चक्रवर्ती राजा होता है, जिसकी सभी राजा (भूपाल) वंदना करते हैं, यदि नीचग्रह का राशीश और उच्चनाथ परस्पर केन्द्र में हों।

उपर्युक्त श्री मोदी के उदाहरण में मंगल और शुक्र परस्पर 4-10 होकर केन्द्र में हैं। अतः नीचभंग राजयोग निर्मित होता है।

आइए एक और उदाहरण लेते हैं :

उदाहरण-2 : पाब्लो पिकासो (चित्रकार)
जन्म दिनांक : 25 अक्टूबर, 1881
जन्म समय : 23:15 बजे
जन्म स्थान : मलागा (स्पेन)

जन्मकुण्डली

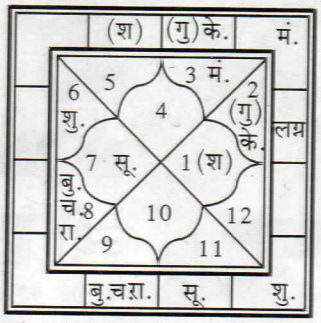

स्पेन के महान् चित्रकार पाब्लोपिकासो की कुण्डली में सूर्य तुलाराशिस्थ होकर नीच में है। सूर्य का राशीश शुक्र है और उच्चनाथ मंगल (मेष का स्वामी) दोनों एक दूसरे से केन्द्र (4-10) में हैं, अतः नीचभंग राजयोग निर्मित होता है।

यस्मिन्नाशौ वर्तते खेचरस्तद्राशीशेन प्रेक्षितश्चेत्स खेटः।
क्षोणीपालं कीर्तिमन्तं विद्ध्यात् सुस्थानश्चेत्किं पुनः पार्थिवेन्द्रः।।

(फलदीपिका 7/28)

जातक कीर्तिमान जनता का रक्षक (क्षोणीपाल) होता है, यदि नीच ग्रह, राशीश द्वारा द्रष्ट हो।

यदि उपर्युक्त नीच ग्रह शुभ भाव में है, तो यह योग अतिश्रेष्ठ है, जिसमें जातक पृथ्वी का इन्द्र (महान् राजा) होता है।

उदाहरण-3 : वी.वी. गिरि (पूर्व राष्ट्रपति)
जन्म दिनांक : 10 अगस्त, 1894
जन्म समय : 10:11 बजे
जन्म स्थान : बहरामपुर (ओडीशा)

भारत के पूर्वराष्ट्रपति श्री वी.वी.गिरि की कुण्डली में चन्द्र वृश्चिक राशिस्थ (द्वितीय भाव में) होकर नीच में है। चन्द्रमा के नीचनाथ वृश्चिक राशि का स्वामी मंगल है। मंगल सप्तम भाव से अपने भाव (वृश्चिक राशि जिसमें चन्द्र नीचस्थ है) को द्रष्ट कर रहा है, अतः नीचभंग राजयोग निर्मित होता है।

जन्मकुण्डली

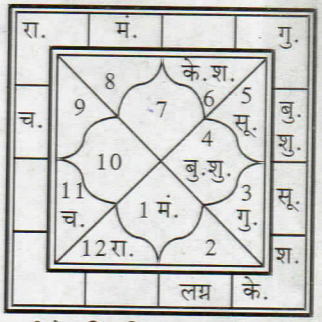

नीचे तिष्ठति यस्तदाश्रिगृहाधीशो विलग्नाद्यदा
चन्द्राद्वा यदि नीचगस्य विहगस्योच्चर्क्षनाथोऽथवा।
केन्द्रे तिष्ठति चेत्प्रपूर्णविभवः स्याच्चक्रवर्ती नृपो
धर्मिष्ठोऽन्यमहीशवन्दितपदस्तेजोयशो भाग्यवान्।।

(फलदीपिका 7/29)

जातक एक धार्मिक, यशस्वी और भाग्यशाली चक्रवर्ती राजा होता है जिसकी अन्य सभी राजा चरण वंदना करते हैं, यदि नीच ग्रहका राशिश या उच्चनाथ दोनों में से कोई भी लग्न से या चन्द्र से केन्द्र में स्थित हो।

उदाहरण-4 : बराक ओबामा
जन्म दिनांक : 04 अगस्त, 1961
जन्म समय : 19:24 बजे
जन्म स्थान : होनोलुलु, हवाई (अमेरिका)

जन्मकुण्डली

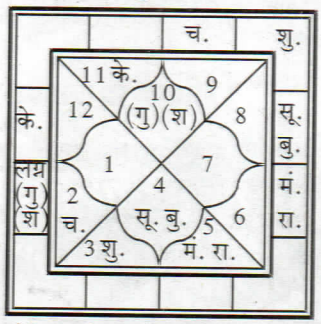

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति श्री बराक ओबामा के उक्त उदाहरण में बृहस्पति मकर राशिस्थ होकर नीच के हैं और राशीश शनि लग्न से केन्द्र लग्न में ही है। अतः नीचभंग राजयोग निर्मित होता है।

नीचे यस्तस्य नीचोच्चभेशौ द्वावेक एव वा।
केन्द्रस्थश्चेच्चक्रवर्ती भूपः स्याद्भूपवन्दितः।।

(फलदीपिका 7/30)

जातक चक्रवर्ती राजा होता है जिसकी सभी राजा (भूप) वंदना करते हैं, यदि नीच ग्रह का राशीश और उच्चनाथ दोनों में कोई एक लग्न से केन्द्र में हो।

बराक ओबामा के उपर्युक्त उदाहरण में बृहस्पति मकर राशिस्थ होकर नीच का है। बृहस्पति का नीचनाथ शनि की स्थिति लग्न (केन्द्र) में ही है, अत: नीचभंगराजयोग निर्मित होता है।

उदाहरण-5 : देव आनन्द (अभिनेता)

जन्म दिनांक : 26 सितम्बर, 1923

जन्म समय : 09:30 बजे

जन्म स्थान : शकरगढ़ (पाक.)

जन्मकुण्डली

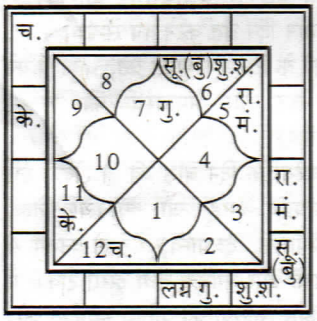

देव आनन्द की कुण्डली में शुक्र कन्या राशिस्थ होकर नीच में है। शुक्र का उच्चनाथ बृहस्पति (मीन राशि का स्वामी) है, जो केन्द्र (लग्न) में है, अत: नीचभंग राजयोग निर्मित होता है।

2. जातक पारिजात :

जातक पारिजात, राजयोगाध्याय, श्लोक 7 में भी में नीचभंग से सम्बन्धित दो योग मिलते हैं। श्लोक 13 तो फलदीपिका के श्लोक 26 के पहले शब्द में 'स्थितो' की जगह 'गतो' के अतिरिक्त ज्यों-का-त्यों है। दोनों श्लोकों का अर्थ भी एक-समान ही है, क्योंकि **'स्थितो'** और **'गतो'** शब्दों का अर्थ एक ही है।

नीचस्थितग्रहनवांशपतौ त्रिकोणे केन्द्रेऽथवा चरगृहे यदि जन्मलग्ने।

तद्भावपे चरगृहांशसमन्विते वा जातो महीपतिरतिप्रबलोऽथवा स्यात्।।

(जातकपारिजात, राजयोगाध्याय, श्लोक 14)

जातक पराक्रमी राजा या समान होता है, यदि नीच स्थित ग्रह का नवांशपति (जन्मकुण्डली में नीच ग्रह जिस नवांश राशि में गया है, उस राशि का स्वामी) जन्मकुण्डली में केन्द्र या त्रिकोण में हो और जन्मकुण्डली की लग्न चर राशि की हो या लग्नेश चर राशि या चर नवांश में हो।

3. सर्वार्थ चिंतामणि :

सर्वार्थ चिंतामणि:, राज-योगाध्याय में नीचभंग राजयोग से सम्बन्धित दो श्लोक हैं। श्लोक 13 तो फलदीपिका के श्लोक 26 जैसा ही है, केवल एक अन्तर है कि सर्वार्थ चिंतामणि में यह योग केवल लग्न से बनेगा, चन्द्र लग्न नहीं लेना है।

नीचस्थिता जन्मनि ये ग्रहेन्द्रा: स्वोच्चांशगा राजसमानभाग्या:।

उच्चस्थिता चेदपि नीचभागा ग्रहा न कुर्वन्ति तथैव भाग्यम्।।

(सर्वार्थचिन्तामणि, राजयोगाध्याय, श्लोक 15)

जातक का भाग्य राजा के समान होता है, यदि जन्मकुंडली का नीचस्थित ग्रह नवांश कुण्डली में उच्च राशिस्थ हो। यदि जन्मकुण्डली में उच्च और नवांश में नीच हो, तो उपर्युक्त जैसा भाग्य नहीं होगा (नीचभंग नहीं होता)।

4. निष्कर्ष :

जातक की जन्मकुण्डली में नीचग्रहों का भली-भांति आकलन करना आवश्यक है, क्योंकि वह इस लेख में वर्णित स्थितियों में राजयोग फलप्रद हो जाते हैं। यदि नीचभंग राजयोग केन्द्र या त्रिकोण भावों में निर्मित होता है, तो और उत्कृष्ट राजयोग फलप्रद होता है। अनुभव में यह भी देखा गया है कि नीचभंग राजयोग में जातक प्रारम्भिक समस्याओं या संघर्षों के पश्चात् ही योगफल प्राप्त करता है।●

गंगादशहरा (12 जून, 2019) पर विशेष फलप्रद

शास्त्रों में उल्लेख है कि प्रकृति प्रदत्त श्वेतार्क गणपति एवं एकाक्षी नारियल तथा तन्त्रोक्त श्रीयन्त्र, स्फटिक श्रीयन्त्र लॉकेट, गौमतीचक्र एवं कमलगट्टे की माला के आधार पर की गई उपासना शीघ्र ही फलदायी होती है। ऐसे व्यक्ति पर माँ लक्ष्मी की कृपा स्थायी रूप से बनी रहती है।

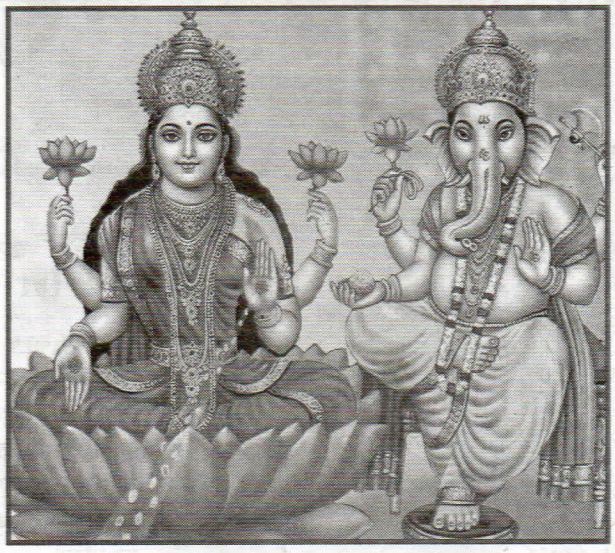

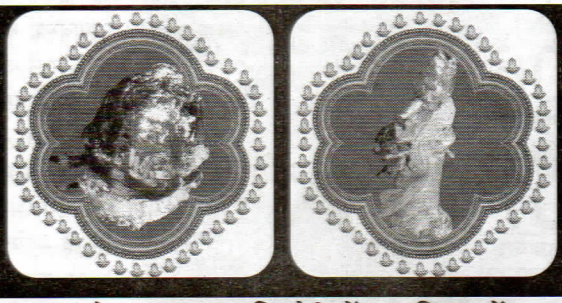

अपने घर अथवा तिजौरी में स्थापित करें

एकाक्षी नारियल-श्वेतार्क गणपति पैकेज

इसे आप प्राप्त कर सकते हैं 1800 रु. में

इस पैकेज में है :

1. श्वेतार्क गणपति, 2. एकाक्षी नारियल,
3. श्रीयन्त्र, 4. स्फटिक श्रीयन्त्र लॉकेट,
5. गौमती चक्र, 6. कमलगट्टे की माला

घर बैठे प्राप्त करने हेतु फोन करें

09772333366, 09772333388

5 प्रतिशत वी.पी.पी. शुल्क अतिरिक्त देय।
* ये पैकेज केवल सम्बन्धित देवता-ग्रह की पूजा-उपासना से सम्बन्धित हैं।